International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(V), January - March, 2024, pp. 54-57

द्विधाओसे भरा तट 'समय द्वीप': भारतीयता के संदर्भ में

गोहिल जानवीबा देसलसिंह*

प्रस्तावना

किसी भी संस्कृति को जानने या समझने के लिए उसके वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए उसके मूल साहित्य में जाना पड़ता है। यदि किसी को भारत की संस्कृति को जानना है तो उसके मूल पाठ ऋग्वेद में जाना होगा। रामायण, महाभारत आदि ग्रंथ भारतीय साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण माने जा सकते हैं। जिसमें राम को एक आदर्श पुरुष और सीता को एक आदर्श महिला के रूप में याद किया गया है। आज के आधुनिक समय में भी अगर इन दोनों चरित्रों को उत्कृष्ट माना जाए तो हम समझ सकते हैं कि भारतीयता का रिश्ता कितना पुराना है। और मूल से क्या संबंध है! बिना जड़ वाला पेड़ विकसित नहीं हो सकता, जड़ से नई शाखा जोड़ी जा सकती है लेकिन जड़ वहीं रहनी चाहिए। स्पेंसर जॉनसन यह कहानी बताता है कि मेरा पनीर किसने स्थानांतरित किया। 'परिवर्तन संसार का नियम है। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि परिवर्तन मौलिक हो– मूल्यों और परंपराओं में परिवर्तन होने पर ही मनुष्य जीवित रह सकता है। जड़हीन परिवर्तन किसी व्यक्ति या समाज को अंत की ओर धकेल सकता है।

मैं यहां सैद्धांतिक भारतीयता पर चर्चा नहीं करूंगा, बल्कि उस कार्य के बारे में बात करूंगा जो भारतीय संस्कृति का महिमामंडन करता है और भारतीय मूल्यों और आधुनिकता के बीच फैला हुआ है। यह बहुत प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, कवि, आलोचक भगवतीकुमार शर्मा की कृति है। 'समयद्वीप' (1974) जिस पर आधारित है आज का मेरा विषय है। षद्वि धनो तत् 'समदृप': भारतीयता के संदर्भ में'। मैं विनम्रतापूर्वक इस बारे में बात करने की कोशिश करूंगा।

'समयद्वीप' कृति के साहित्यिक स्वरूप के संबंध में भी मतभेद है। मेरे अनुसार घटना विवरण एवं चरित्र निर्माण सीमित होने के कारण कार्य को लगुनवल प्रकार का कार्य माना जा सकता है। इस कृति को चुनने का कारण प्राचीनता और आधुनिकता का मेल है। नीलकंठ को प्राचीनता और नीरा को आधुनिकता के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है।

समद्वीप की ऑब्जेक्ट प्लेट बहुत छोटी है और अन्य समय दिखाती है। लेकिन उनका दिल बहुत विशाल है. नीरा और नीलकंठ के दांपत्य जीवन के विघटन, सामाजिक–सांस्कृतिक मतभेद, पुराने–नए मूल्य, प्राचीन–उन्नत समय के प्रति आस्था और विज्ञान के बदलावों के बीच नायक को आंतरिक अकेलेपन की पीड़ा में जड़ों की ओर लौटते हुए देखा जा सकता है। पुराने और नए समय के साथ–साथ मानसिक संघर्ष भी है

• शोध छात्र, गुजराती स्नातकोत्तर विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, गुजरात।

The paper was presented in the National Multidisciplinary Conference organised by Maharani Shree Nandkuverba Mahila College, Bhavnagar, Gujarat on 21st January, 2024.

संपूर्ण लैगुनावल अतीत और वर्तमान में छोटे महाद्वीपों में विकसित हो गया है। काम का शीर्षक कहानी पर बिल्कुल फिट बैठता है। मुझे विभाजित व्यक्तित्व का भ्रम पैदा करना पसंद नहीं है, यानी मेरा जीवन विभाजित नहीं है। मैं मुखौटे के साथ क्यों रह सकता हूं?' (पृ. 81) निल नीरा से कहता है कि ' मैं दो चरम सीमाओं में बंट गया हूं, नीरा। एक तरफ विश्वास का आकाश है, दूसरी तरफ अविश्वास की खाई है।'' (पृ.96) नील मुंबई की तरह माया नगरी के आकाश में उड़ना चाहता है लेकिन यह खाई अविश्वास उसे सदैव अपनी ओर खींचता है।

''दीपक मत बुझाओ''

''होटल में चाय पी?''

'कल तुमने पहले ओत्तमचंद वानिया का दिया हुआ बिस्किट क्यों खाया? एकदम खराब हो गया'

'यदि पत्नी अपने मुख से पति का नाम ले तो पति की आयु कम हो जाती है'

'दामाद केवल सूती कपड़े पहनते हैं'

'तंग रहना चाहिए'

'जानोई को इसे पहनना होगा'

अगर आटे में पानी हो तो वह चिपचिपा हो जाता है

पकी हुई रोटी को एथी माना जाता है।

रजस्वला स्त्री पवित्र स्थान या रसोईघर में स्वतंत्र रूप से प्रवेश नहीं कर सकती वगैरह।

वह इन सभी रीति–रिवाजों से परिचित है लेकिन अब उसे यह सब व्यर्थ लगता है। मुंबई आने के बाद वह इन सभी मानी जाने वाली मान्यताओं या अंधविश्वासों से मुक्त होकर एक नई जीवनशैली जीने की कोशिश कर रहे हैं। और रहता भी है. लेकिन वह अपने जीवन मूल्यों और अपनी जड़ों को नहीं भूल सकते।

दूसरी ओर, नीलकंठ के बिल्कुल विपरीत छोर पर नीरानगर की एक स्वतंत्र और शिक्षित 'संभ्रांत' गैर–ब्राह्मण समाज की लड़की है। यह बुद्धिमान युवा महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है। वह एक स्वतंत्रता–प्रेमी लड़की है जो सिनेमाघरों, रेस्तरां, क्लबों, वाद–विवाद समितियों आदि में स्वतंत्र रूप से घूमती है। ऐसी ही एक जगह पर उसकी मुलाकात नीलकंठ से होती है। मैक के बिल्कुल विपरीत लोगों के बीच प्रेम संबंध विवाह में परिणत होता है।

सुरा गांव के शिव मंदिर के पुजारी शिवशंकर का बेटा नीलकंठ इन रीति–रिवाजों से बचने और पैसा कमाने के लिए गांव छोड़कर मुंबई आ गया। एक विज्ञापन कंपनी में काम करता है. उनके रहन–सहन, पहनावे, व्यवहार और सोच में आमूल–चूल परिवर्तन देखने को मिलता है। वह सिगरेट पीते हुए बड़े हुए। एगकारी ने खाया है, शराब पी है. आदि शहरी संस्कृति के संस्कार जीवंत हो उठे हैं। आज नीलकंठ हर महाशिवरात्रि पर अपने गृहनगर जाते हैं, अंकिचन ब्राह्मण के जैसे कपड़े पहनते हैं, धर्मक्रिया करते हैं और श्लोकों का जाप करते हैं। पूजा करता है. आदि प्रकार व्यवहार के माध्यम से परंपरा को कायम रखने का कार्य करते हैं। जो मुंबई की जिंदगी से बहुत अलग है. लेखक ने यह भी कहा कि आज का आदमी गाँव की पारंपरिक जीवन शैली और महानगर की आधुनिक जीवन शैली के बीच फँसा हुआ है। यही धारणा नीलकण्ठ ने प्रकट की है।

जयभाभी एक भारतीय परिष्कृत महिला हैं। उनके पति नीलकंठ का बड़ा भाई चंद्रकांत मानसिक रूप से बहरा है। हालाँकि, जया भाभी उनकी देखभाल के साथ–साथ घर और मंदिर के काम का बोझ भी उठाती हैं। यह भारत की पारंपरिक महिला है। जब नीरा अपने पति की परवाह किये बिना समुद्र में ज्वार आने के कारण अकेले ही समुद्र से किनारे की ओर चल देती है। और केवल अपने बारे में चिंतित है। जहां आधुनिकता पाई जाती है. नीरा के किरदार ने परंपरागत परंपराओं की सीमाएं तोड़ दी हैं.

शादी के तीन साल बाद, नीरा की जिद के कारण नीलकंठ महाशिवरात्रि के लिए अपने गृहनगर जाता है। जहां नीरा को नील नहीं बल्कि नीलकंठ दिखाई देता है। वह विशुद्ध भारतीय ब्राह्मण संस्कृति का युवक है। जिसका विवाह ब्राह्मण लड़की से हुआ हो वह शरीर शुद्धि करता है, जनोई पहनता है, रेशम का अबोटू पहनता है, संस्कृत श्लोकों का पाठ करता है। ब्रह्मा नदी में स्नान करते हैं। बुद्धिजीवी अपना चश्मा उतारते हैं और महादेव की पूजा करते हैं। मीरा इस नये रूप से आश्चर्यचकित हो जाती है और गर्भगृह से बाहर चली जाती है। इस व्यवहार से नीलकंठ बेली वृक्ष के नीचे बैठकर नीरा को अपने प्राचीन जीवन का बोध कराता है।

'नीरा, तुम्हें शायद इस गांव की धूल भरी गलियों और यहां के गंदे लोगों का अहसास न हो, लेकिन यह मेरी जन्मभूमि है। मैं यहीं पैदा हुआ और यहीं पला–बढ़ा हूं। अगर बापूजी नाराज हो गए तो क्या होगा? हम उन्हें मना लेंगे। हम उनके पैर पकड़ लेंगे। 'और माफ़ी मांगें...'

दूसरी ओर जसवाला के कारण जो स्थिति बनी है. आइये देखते हैं उनका डायलॉग.

'खड़े हो जाओ नील।'

'मेरे अनुरोध का सम्मान करो, नील! उठो'

'आप इन लोगों से माफी क्यों मांग रहे हैं? उनसे न तो उन्होंने और न ही मैंने कोई अपराध किया है।'

'धन्य हैं उनके विश्वास! हमें उन्हें क्यों सहलाना चाहिए?'

सुरा की जिंदगी नीलकंठ की मुंबई से अलग है. तो नीरा कहती है...

'मैं आपके रवैये को कायरतापूर्ण मानता हूं और इससे नफरत करता हूं।'

निरत धर्म को मेला घेला अब्बोटिया में निहित और मूर्तियों में सन्निहित मानते हैं। वह अपने गृहनगर में अपना जीवन बदलना नहीं चाहती। 'तो हमें अपनी मान्यताओं को बदलने की सुविधा के अधीन क्यों करना चाहिए? मैं केवल वैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा पुष्टि की गई अपनी बुद्धि के मार्गदर्शन को स्वीकार करूंगा, और इन तुच्छताओं के आगे नहीं झुकूंगा।'

घटनाक्रम पर नजर डालें तो यहां कोई विशेष आयोजन नहीं होता। मुंबई शहर में नीलकंठ की 12 से 14 घंटे की रोजमर्रा की जिंदगी जीवन के पतन को दर्शाती है। और यद्यपि एक वर्ष पहले सुरा गांव में परंपरा और आधुनिकता के बीच संघर्ष चल रहा है, घटनाओं का क्रम सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन को इतनी तीव्रता से प्रस्तुत करता है कि पूरी सृष्टि को आंखों के सामने आते देखा जा सकता है। सेटिंग, प्रसंग और दृश्य के सूक्ष्म चित्रण में लेखक की गहरी संवेदनशीलता झलकती है। नीलकंठ के दिन के प्रत्येक चित्र उभरे हुए हैं इसलिए ये चित्र मूर्त एवं वास्तविक बन रहे हैं। लेखक चित्रों को निखारने के लिए रंगों, छलाँगों आदि को गहरी नजर से पकड़ने में सक्षम है।

एक साल पहले नीरा के साथ नीलकंठ के परिवार के कटु व्यवहार के कारण नीरा नीलकंठ को छोड़कर पियरे के पास चली गयी है– जिसका पता दर्शकों को काम की शुरुआत से ही चल जाता है. क्योंकि नीलकंठ का घर और मन दोनों अस्त–व्यस्त हैं। कहानी समय दृष्टि कैलेंडर के पन्ने से शुरू होती है और पिता की मृत्यु संदेश के पन्ने पर समाप्त होती है। इन दो पन्नों के बीच नीलकंठ के दो द्वीपों के बीच पुल न बन पाने की व्यथा, अकेलेपन का दर्द और प्राचीन मूल्यों के साथ आधुनिकता में जीने का संघर्ष प्रस्तुत किया गया है। संप्रत और अतीत में नीलकंठ की जीवन कथा लेखक द्वारा प्रयोगात्मक रूप से रची गई है। कभी–कभी उन्हीं महाद्वीपों में अतीत का दस्तावेज़ भी मिलता है।

नीलकंठ सुरा और मुंबई नाम की दो नावों पर सवार हो गए हैं। एक नाव में पिता और दूसरे में नीरा। जैसे ही ये दोनों नावें अलग–अलग दिशाओं में आगे बढ़ रही हैं, नीलकंठ दोनों नावों से अलग हो जाता है। और नीरा को उसकी जिंदगी से जाने से नहीं रोक सकता और दूसरी तरफ अपने पिता की भावनाओं को भी संतुष्ट नहीं कर सकता. वह बिल्कुल अकेला हो जाता है. और काम के अंत में उसे तीन सपने आते हैं जिनसे

उसकी मनःस्थिति का पता चलता है। पहला है देशी बीज और चमगादड़, दूसरा है इंडिया गेट, मिस्टर दलाल और उनकी जेब में दिखे हीरे और सोना, तीसरा है उनका बीली वृक्ष का प्राचीन मंदिर और वीरेश्वर महादेव और वहां रहने वाले लोग।

चूंकि इस कृति का केंद्र बिंदु शिव हैं इसलिए पात्रों के नाम भी उसी के अनुरूप रखे गए हैं। नीलकंठ के पिता शिव शंकर, दो भाई चंद्रकांत और महेश, माता गौरीबा और भाभी जया भाभी, अन्य कर्मकांडी ब्राह्मणों के नामों में भी ब्राह्मणत्व और सुंदरता की वही शैली है। शहरी संस्कृति के पात्र भी आधुनिक हैं। नीरा, डॉ. समीर, श्रीमान दलाल जी, कुलकर्णी, मिस पिंटो, रोमा सांघवी आदि। सुरा गांव के पात्र ऐसे पात्र हैं जो पारंपरिक परंपरा और जड़ों को उजागर करते हैं। जबकि शहर के पात्र एक परिष्कृत जीवनशैली जीते हैं। इन दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है. पात्रों की भाषा सुपर लेखक द्वारा अपनाई गई है। नीरा नीलकंठ की चर्चा सबसे ज्यादा अंग्रेजी भाषा में होती है। वहीं संस्कृत भाषा के वीडियो को बनाने वाले ने इसे खास और अनोखे अंदाज में बनाया है. काम की शुरुआत में ही नीलकंठ कैलेंडर में तिथि को संस्कृत में देखते हैं, 'मसो तू मासो मासो कृष्ण पक्षे तिथि' इस प्रकार, अंग्रेजी भाषा के साथ संस्कृत का विनियोग भाषा समर्थन के साथ एक प्रमुख सुज दर्शन को सामने लाता है। यहाँ तक कि अलंकरण भी प्राकृतिक गद्य की समृद्धि से प्रभावित हैं। रचनाकार ने पात्रों का भी अच्छा प्रयोग किया है।''हाय हाय बा!'', ''क्या हाल है अली वाहू?'' यहां उपन्यास में संवादों के माध्यम से सास–बहू की भाषा को उजागर किया जा सकता है, मुहावरों और कहावतों के माध्यम से ब्राह्मण समाज की अधिक प्रशंसा की गई है। 'जीवेते जीवत', 'कुल बोलव', 'पानी परी पार अब्राम सेवन जेनरेशन', 'करम कुटवा' आदि के उदाहरण महत्वपूर्ण हैं।

संदेह के द्वीप पर खड़ा नीलकंठ नीरा को अपने मौलिक स्थायी संस्कारों के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए अपनी आंतरिक इंद्रियों के बारे में बताता है। नीलकंठ के मानस पटल पर नजर डालें तो सबसे पहले नीलकंठ के ब्राह्मण संस्कारों का सिंचन, फिर नीलकंठ के शहरी जीवन में रहने के साथ मूल संस्कारों के लिए उठते सवाल और संघर्ष और अंत में भारतीय सांस्कृतिक संस्कारों का महत्व। इस प्रकार लैगुनवल अपने समय और नायकों को दो पूरक बिंदुओं में विभाजित पाता हैः अतीत और वर्तमान, पारंपरिक मान्यताएं और आधुनिक विवाद।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा भगवतीकुमार। (1974) समय द्वीप। अहमदाबादः आरआर सेठ की कंपनी.
2. दवे रमेश आर., पारुल कंदर्प देसाई। गुजराती साहित्य का इतिहासः अहमदाबादः गुजराती साहित्य परिषद।

❖◆❖